मैत्रेयीकृति

हिंदी ई पत्रिका

विद्यार्थियों के लिए, विद्यार्थियों के द्वारा

वर्ष 2 अंक 3 जनवरी-जून 2020

मैत्रेयीकृति (हिंदी ई पत्रिका)

मैत्रेयी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय
NAAC द्वारा ए ग्रेड प्राप्त

डॉ हरित्मा चोपड़ा

डॉ पुष्पा गुप्ता

नेहा बिस्वास

अंशुल

प्रिया

पीयूषी

मोनिका

संरक्षण एवं परामर्श
डॉ हरित्मा चोपड़ा
प्राचार्या
संपादन
डॉ पुष्पा गुप्ता
हिंदी विभाग
आवरण पृष्ठ
नेहा बिस्वास
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

चयन एवं टंकण
अंशुल हिंदी विशेष तृतीय वर्ष
मोनिका प्रिया पीयूषी
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष
तकनीकी संपादन
मोनिका प्रिया
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

शुभकामना संदेश

कैलेंडर के नए वर्ष के साथ नए सेमेस्टर की शुरुआत नवीन ऊर्जा से परिपूर्ण होती है। जिसमें एक ओर वर्तमान सत्र के सभी निर्धारित लक्ष्यों को समय-सीमा में पूरा करने की चुनौती होती है तो दूसरी ओर पूर्ण कर लिए गए उद्देश्यों की खुशी भी उत्साहवर्धन कर रही होती है। परंतु वैश्विक स्तर पर कोरोना वायरस के रुप में जीवन पर मंडराते गहन संकट के कारण यह सत्र सहज-साधारण ढंग से गतिशील नहीं रह सका। लेकिन मुझे इस बात की खुशी है कि लॉकडाउन के इस कठिन दौर में भी विद्यार्थियों की कलम सक्रिय रही। उन्हीं की रचनात्मकता का सुखद परिणाम "ई" पत्रिका का यह अंक है।

शुभकामनाओं सहित
डॉ हरित्मा चोपड़ा
प्राचार्या

संपादकीय

वैश्विक स्तर पर मौजूदा समय भयंकर उथल-पुथल से भरा है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थितियाँ और समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। इस परिदृश्य में भविष्य की तस्वीर अस्पष्ट ही है। यह स्थिति हमें अतिरिक्त सजगता के साथ आगे बढ़ने को प्रेरित कर रही है। अतः शिक्षा संस्थानों का यह सर्वोपरि दायित्व बन जाता है कि वह विद्यार्थियों को इस विश्वव्यापी संकट से जूझते हुए पठन-पाठन के लिए प्रोत्साहित करें। साथ ही उन्हें सभी स्तरों पर सक्रिय रचनात्मकता से जोड़े रखने का प्रयास भी करते रहें। कॉलेज की "ई" पत्रिका भी रचनात्मकता का एक सशक्त मंच है। प्रत्यक्ष संवाद की अनुपस्थिति, संसाधनों की सीमित उपलब्धता के बावजूद विद्यार्थियों ने इस अंक को रुपाकार देने की चुनौती को सहर्ष स्वीकारा। यहाँ तकनीक के उज्ज्वल पक्ष को रेखांकित करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उसी के द्वारा उपलब्ध कराए गए विभिन्न माध्यमों ने ही रचनाओं को हम तक पहुंचने का मार्ग सुगम बनाया। इन रचनाओं से गुज़रते हुए जहाँ युवा प्रतिभा की अभिव्यक्ति के आयाम चमत्कृत करते हैं वही भविष्य के प्रति आश्वस्त भी करते हैं।

पत्रिका का तीसरा अंक आप सबको सौंपने से पहले मैं प्राचार्या डॉ. हरित्मा चोपड़ा के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ क्योंकि प्रत्येक स्थिति में उनकी सहृदयता ही पत्रिका का जीवनाधार है। विभाग तो प्रत्येक स्थिति में धन्यवाद का अधिकारी है ही। अंत में पत्रिका से प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में संबंद्ध विद्यार्थियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके कारण पत्रिका का यह अंक तैयार हो सका।

डॉ पुष्पा गुप्ता
हिंदी विभाग

छात्र संपादकीय

मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझती हूँ कि मैं मैत्रेयी कॉलेज की विद्यार्थी हूँ क्योंकि यहाँ सभी की आवश्यकता के अनुरुप व्यक्तित्व विकास के अवसर उपलब्ध हैं। मैं स्वयं को हिंदी में कंप्यूटर प्रयोग के क्षेत्र में सक्षम बनाना चाहती थी और संपादन से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों जैसे:- टंकण, प्रूफ़ रीडिंग, चित्र-व्यवस्था आदि का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना चाहती थी। 'ई' पत्रिका से सीधे जुड़ सकने की सुविधा ने मुझे यह अवसर उपलब्ध करा दिया। पत्रिका के लिए काम करते हुए मैंने अनेक जीवन-मूल्यों को वास्तव में समझना सीखा| पत्रिका के तकनीकी संपादन में प्रारंभिक योगदान मेरी सहपाठी प्रिया सिंह का रहा, जिसकी मैं आभारी हूँ।

इस अनुभव ने मुझे सिखाया कि हमें कॉलेज में होने वाली सभी गतिविधियों में यथासंभव सहभागिता करनी चाहिए ताकि एक सुदृढ़ भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाया जा सके।

मोनिका सैनी
हिंदी विशेष, द्वितीय

अनुक्रमणिका

कविता

1. जिंदगी	हरमन	2
2. बदलते दौर में	अंकिता रावत	2
3. अकेला मुसाफिर	मोनिका सैनी	3
4. आगे बढ़ने को	अनीता कुमारी	3
5. बिन भाई की बहन	नेहा	4
6. मेरा सपना	प्रीति कुमारी	4
7. दोस्ती	शिवानी दुबे	5
8. छोटी सी जिंदगी	शिल्पा प्रजापति	5
9. मेहनत	मिताली रावत	6
10. माँ	प्रीति शर्मा	6
11. मेरी प्यारी सी दोस्त	पूजा	7
12. पेड़	मीनाक्षी	7
13. कविता कैसे लिखी	सोनम	8
14. भाषा	सोनू कुमारी	8
15. बेटी	नेहा	9
16. नारी	सुमन	9
17. नारी की पीड़ा	मीनाक्षी	10
18. पहचान	कोमल नागर	10
19. बचपन	हरमन	11
20. हमारा देश	अनीता कुमारी	11
21. मैं तेरी क्या हूँ	कृतिका	12
22. माँ	काजल	12
23. बेटियाँ	उपासना	13
24. भाई	सोनिया	13
25. सच्चा मित्र	शिवानी दुबे	14
26. किस्मत	मोनिका सैनी	14
27. लड़की होना आसान नहीं	राजश्री	15
28. भारतीय वीर सैनिक	प्रशंसा राजपूत	16
29. प्रकृति	प्रशंसा राजपूत	17
30. समाज	आरती	18
31. आ उड़ चलें	मानसी यादव	18
32. मनुष्यता	अनिता कुमारी	19
33. हमारा भारत	वंदना मिश्रा	19
34. सफलता	अनिता कुमारी	20

गद्य

35. स्कूल से कॉलेज तक का सफर	हिमाँशी	22
36. मेरे पापा-मम्मी	राजश्री	22
37. पर्यावरण	दिव्या जैन	23
38. तुझसे पहली मुलाकात	शुभ्रा त्रिवेदी	23
39. विद्यालय	काजल	24
40. मेरी पहली यात्रा	अमीषा	24
41. महिलाओं का योगदान	पल्लवी	25
42. कॉलेज का पहला दिन	रोशनी परिहार	26
43. मेरा संघर्ष	आशी संगल	26
44. मेरी पहली यात्रा	सफिया रहमान अंसारी	27
45. हम	पिंकी कुमारी	28
46. बगीचा	नंदनी वर्मा	28
47. यात्रा वृतांत	संजना	29
48. हमेशा खुश रहो	मनीषा	30
49. प्रकृति	अंशु तिवारी	30
50. मेरे आदर्श: मेरे पिता	लक्षिता	31
51. योग के लाभ	सपना	32
52. हमारे माता-पिता	महिमा	32
53. मेरे स्कूल के दिन	कहकशा	33

कला

54. मन-मयूर	भावना शर्मा	35
55. अस्ताचलगामी सूर्य	भावनाशर्मा	36
56. आसमाँ छू लूँ	अनीता कुमारी	37
57. प्रतिच्छाया	अनीता कुमारी	38

कविता

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग |
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ||
-रहीम

जिंदगी

बचपन में कोई दुख ,
कोई फिकर नहीं होता
बस जिंदगी में होता है खेल
बचपन में चोट लगने पर
माँ की गोद में
सर रखकर रोना ,
तब वह माँ की गोदी
सबसे ज्यादा सुकून देती
और माँ का प्यार
दवा का काम करता था |
पर जब मैं बड़ी हुई
तो जिंदगी ने मुझे बहुत
कुछ सिखा दिया |
जिंदगी में अब
जितने भी उतार-चढ़ाव ,
तकलीफ आती है ,
तो लगता है
आदत सी हो गई है
इन्हें सहने की|
आज चाहे
जितनी भी चोट लगे
महसूस नहीं होती ,
जिंदगी ने यह भी
सहना सिखा दिया|
जबमाँ बचपन में
चॉकलेट दिलाती
और पिता खिलौने
तो मन खुश
हो उठता था |
पर जब मैं बड़ी हुई
तो मैंने समझा कि कितनी
मेहनत करके उन्होंने
मुझे यह दिलाया था |
हां, बड़े होकर मैंने
अपनी जिम्मेदारियाँ भी
समझ ली है
हां, जिंदगी ने मुझे
बहुत कुछ सिखा दिया है।।

हरमन
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

बदलते दौर में बदलता मनुष्य

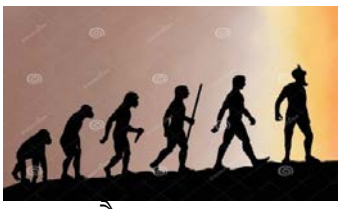

भर गया है मन
अब बचा नहीं
कुछ कहने को|
लोभ, ईर्ष्या की अग्नि मे
मनुष्य कैसे कुचल रहा है?
तू अपनों को देख,
रिश्ते- नाते कुछ ना रहे,
मतलब का सब लगता है|
कोई किसी का ना रहा,
अब बस यही सत्य लगता है।
मनुष्य ही कब मनुष्य का
शत्रु धीरे-धीरे बन चला ,
इस बात का ऐ मनुष्य
तुझे क्या ना पता चला?
समय बहुत है अभी भी ,
कर ले तू एक दृढ़ निश्चिय
सत्य से कर सामना तू ,
खोज ले कोई हल मनुष्य।
खोल अपने तू चक्षु,
देख ले अपने यह कर्तव्य,
ले जा अब तू
इस समाज को
जहाँ बस हो
प्रगति एक लक्ष्य।।

अंकिता रावत
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

अकेला मुसाफिर

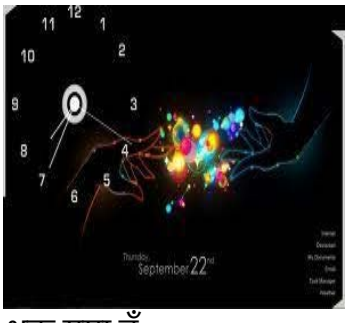

थक गया हूँ
दुनिया के हर रास्ते पर
चलते- चलते |
थक गया हूँ
उसकी हर अदा पर
मरते- मरते |
लाखों निकलते हैं
उसकी गली से
मै सिर्फ एक अकेला
निकलना चाहता हूँ ।
सावन के माह में
काली घनघोर घटा में
मैं सिर्फ अकेला
जुड़ना चाहता हूँ |
हां, मैं भी एक बार
मोहब्बत करना चाहता हूँ |
उसकी गली में
मैं एक अकेला मुसाफिर
बनना चाहता हूँ |
उसकी गली का
मैं उसकीअँधेरी गली को
रंगीन बनाना चाहता हूँ |
मैं सर्द रात में
उसके कमरे की
दीवार बनना चाहता हूँ ।
मैं उसकी जुल्फों को
अंधेरी गली में
संभालना चाहता हूँ \
हां, मैं उससे उसकी गली में
मोहब्बत करना चाहता हूँ ।
मैं उसकी हर अदा को
चाहता हूँ ,
मैं उसकी गली में
उससे अपनी
बात मनवाना चाहता हूँ ।
मैं उसकी गली का
मुसाफिर बनना चाहता हूँ
मैं उसकीमाँ का
इकलौता दामाद
बनना चाहता हूँ |

मोनिका सैनी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

आगे बढ़ने को

मेरा मन व्याकुल बढ़ने को,
कदम- कदम आगे बढ़ने को |
अक्षर के यह काले मोती ,
बनकर दिव्य जलाए ज्योति |
समझ सकूँ मैं
इसकी भाषा, स्वयं लिखूँ
अपनी परिभाषा ,
मनचाहे पथ चलने को
कदम- कदम आगे बढ़ने को|
लेकर अपना नाम बताऊँ,
गुमनामी का श्राप मिटाऊँ
पढ़ी लिखी नारी कहलाऊँ,
जीवन में कुछ कर दिखाऊँ |
ज्ञान बने सीढ़ी चढ़ने को
कदम- कदम आगे बढ़ने को |
छठ जाए दुख कीअँधियारी
पढ़ी- लिखी हो यदि हर नारी |
अनूठी यह चिंगारी जले
जिसमें हर नारी
चले आगे बढ़ने को,
कदम- कदम आगे बढ़ने को |

अनिता कुमारी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

बिन भाई की बहन

बिन भाई की बहन कहें सब,
सुनकर यह, आँख
मेरी भर आई है|
आँख खुली तो देखा फिर से,
राखी के त्योहार की
बारी आई है|
खूब नम हैआँखें मेरी,
याद भाई की आई है,
बिन भाई की बहन
यह सुनकर आँख
मेरी भर आई है|
आँखों में कुछ
सपने थे ,
पर आँसू ने
उनको बहा
दिया,
क्या करूँ
लोगों के तानों ने,
कमजोर बना दिया |
कितना भी छुपा लूँ
फिर भी,
रोना मुझे आ गया,
पर कुछ ने
मुझे हिम्मत दी,
कुछ ने बातें समझायी|
क्या हुआ,
नहीं है सगा भाई,
पर हम तो
है ना तेरे भाई,
आँखें खुली तो
देखा फिर से,
राखी के त्यौहार की
बारी आई है,
बिन भाई की बहन यह
यह सब कहे,
सुनकर आँख मेरी भर आई है।

नेहा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

मेरा सपना

क्या है मेरा सपना ,
मन में है यह
अजीब सा सपना,
किस दौड़ में
भाग रही मैं ,
हर रोज
अपने की बहका रही हूँ|
दिन-रात बैठकर
खोयी मैं,
अपने मन की उलझन में ,
मुझसे पूछे
मेरा हर पल ,
आखिर क्या है
मेरा कल ?
हर किसी से
पूछ रही मैं
अपने मन की
उलझन को ,
थोड़ा मुस्कुरा कर रहना है ,
सब कुछ समझ कर
रहना है ,
सहना है|
जिंदगी के दो पल
जो मिले ,
इन लम्हों को जीना है
और कुछ ना सही
तो हँसना और
सभी से
मिल- जुल कर रहना है।।

प्रीति कुमारी
वनस्पति विज्ञान विशेष, द्वितीय वर्ष

दोस्ती

मेरी दोस्त -
जो हर चीज में
मेरे साथ होती है।
मेरे सुख-दुख में
साथ निभाती है।
मेरे गलत कार्य
करने पर
वहडाँटती
और समझाती है।
मेरे हर गलती को
वह खुद की
गलती समझ
उसे सुधारने में
लग जाती है।
मेरे लिए हमेशा
उसके मन में
सच्ची दोस्ती
निभाने का
संघर्ष चलता है।
मेरे हर एक
दिन को वह
खूबसूरत बनाने में
जुटी है ,
मेरा मुस्कुराना
उसके लिए बहुत
मायने रखता है।
मेरी तारीफ पर
वह मुझसे भी
ज्यादा खुश होती है।
मेरे लिए वह
सब से लड़ जाती है।
कभी-कभी उसमें
मेरी माँ झलकती है
वह है इतनी खूब,
मेरी दोस्त।

शिवानी दुबे
हिन्दी विशेष ,द्वितीय वर्ष

छोटी सी ज़िन्दगी

छोटी सी ज़िन्दगी
अपने आप में खुश रहो।
क्यों ढूँढ़ते हो
अपनी खुशियों को
दूसरों में,
अपने आप में खुश रहो।
जो लौटकर
नहीं आ सकता
उसके बिना ज़िंदगी में
खुश रहो ।
छोटी सी ज़िंदगी
अपने आप में खुश रहो।
अपने खुशियों के लिए
इंतज़ार क्यों करना ?
अपने आप में खुश रहो।
छोटी सी ज़िंदगी है
अपने आप में खुश रहो।

शिल्पा प्रजापति
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

मेहनत

मैंने पूछा कौन?
वह बोली
पहचान कौन?
छाया था अँधेरा ,
चारों और खामोशी
मैंने सोचा
शायद आई होगी उदासी,
वह बोली
उदासी नहीं हूँ
मैं....
मेहनत हूँ तेरी |
अभी है खामोशी,
फिर होगा शोर ,
मेहनत तेरी ले
जाएगी ,
तुझे तेरी
कामयाबी की ओर|
अभी तो फैला है अँधेरा ,
शायद सपनों पर है
निराशा का पहरा ,
पर रख मन में आशा ,
तभी तो होगा नया सवेरा....
अंत में वो बस
इतना कह गई.....
मचाती नहीं हूँ मैं शोर.....
मैं तो बस
ले जाऊँगी तुझे,
तेरे लक्ष्य की ओर....
जहाँ सब करेंगे
तेरे हुनर पर गौर
इतना कहकर
वो मुझ में ही खो गई
और मैं,
फिर अपने
लक्ष्य पाने की
राह में मग्न हो गई।

मिताली रावत
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

माँ

कहते हैं दुनिया में
माँ बड़ी प्यारी
और हँसमुख होती है।
हमें बस बताना है दुख,
पर वह अपना दुख
बच्चों को नहीं बताती,
भले ही वह
कितनी ही परेशान
क्यों न हो ?
पर वह
बच्चों के सामने अपनी
अपनी परि स्थितियों का
सवाल नहीं रखती।
माँ को जानना
आसान नहीं
बल्कि मुश्किल होता है ,
इसलिए माँ का दर्जा
किसी और को
नहीं दिया जाता।
माँ बच्चों के लिए
दिन -रात
एक कर देती है
कुछ भी कर जाती है।
माँ को भगवान ने भेजा
क्योंकि हर बच्चा
अकेला है|

प्रीति शर्मा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

मेरी प्यारी सी दोस्त

मेरी प्यारी सी दोस्त -
मेरी जिंदगी का
सबसे खूबसूरत
हिस्सा हो तुम ,
मेरी जिंदगी के
हर सफर की
साथी हो तुम,
कभी मस्ती की
तो कभी लड़ाई की भी
साथी हो तुम,
सच्ची दोस्ती का
मतलब भी
तुम्ही से सीखा है ,
एक अभिलाषा है
तुम कभी ना छोड़ना
मेरा साथ,
चाहे कैसी भी
हों परिस्थितियाँ |
तुम्हारे साथ से
आसान हो जाती हैं राहें,
हमारी दोस्ती
थोड़ी सी खामोश है ।
पर तुम्हारे सच्चे प्यार
को बयां करती है
तुम बस यूं ही ,
हमेशा रहना
मेरी प्यारी दोस्त

पूजा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

पेड़

पेड़
जीवन में हमेशा
खुशियाँ भरते,
जीवन में अनेक
रंगों को भरते,
पेड़
जीवन का आधार है,
प्रकृति का अंग है |
इसके बिना
जीवन बेकार ,
लोगों को देता
सभी संसाधन
परंतु आज हो रहा है
उसका पतन।
रुको, मनुष्य-
इसको
नष्ट होने से बचाओ,
जीवन में इसके
महत्व को समझो।
"पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ"

मीनाक्षी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

कविता कैसे लिखी

ना जाने क्या सोचकर
मैंने लिखना शुरू किया,
कभी लगा नहीं था कि
मैं भी कविता
लिख सकती हूँ ,
पर आज मैंने जाना
कि हो अगर
मन में हौसला और
जिंदगी को देखने का
नया नजरिया तो
बदल सकता है।
कोई भी अपने जीवन को|
किन्नर
जिनको इस
समाज ने ठुकराया
उन्होंने ही बनाई
अब अपनी एक पहचान,
समाज के बार बार-
तिरस्कार के बाद भी
बनाया अपना एक
उज्जवल भविष्य ।
अब उन्हें फर्क नहीं पड़ता ,
इस समाज द्वारा
बोले कटु शब्दों से
क्योंकि अब उन्होंने
बनाया खुद को सफल ।
समाज ने दिया उन्हें
एक नाम "किन्नर"
उस नाम को भी पीछे छोड़
बनाया अपना भविष्य।

सोनम

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

भाषा

समाज का दर्पण है भाषा ,
हर व्यक्ति की
पहचान है भाषा ,
इंसान का
व्यक्तित्व है भाषा ,
समाज में हो रहा
नया बदलाव है भाषा,
समाज में हो रहे
अन्याय के खिलाफ
आवाज है भाषा,
हर व्यक्ति का
गहना है भाषा ,
समाज की आत्मा की
आवाज है भाषा ,
समाज का नया उगता
सवेरा है भाषा ,
हर व्यक्ति की
आत्मा है भाषा,
समाज में हर व्यक्ति की
पहचान है भाषा ,
व्यक्ति को व्यक्ति से
जोड़ती है भाषा ,
आत्मा से परमात्मा का
मिलन है भाषा,
कठिन कार्य को
आसान बनाती हैभाषा ,
ईश्वर और व्यक्ति का
प्रेम है भाषा ,
आत्मा से आत्मा का
मिलन है भाषा ,
हर परेशानी का
हल है भाषा,

सोनू कुमारी

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

बेटी

बेटी तो है पराई ,
यह बात कह कर
आज हुई मेरी विदाई,
बाबा तूने यह
कैसी रीत बनाई ,
जिस आँगन में खेली-कूदी ,
आज उसी घर की
दहलीज से
मैं हुई पराई ,
बाबा तूने कैसी
यह रीत बनाई।
जन्म हुआ था जब मेरा ,
जहाँ खुशियाँ
तुमने मनाई थी
फिर आज क्यों बाबा
रो-रो कर की ,
तुमने मेरी विदाई।
जहाँ मेरे कदमों की
आहट से
तुम्हारे होठों पर
एक मुस्कान
आ जाती थी ,
फिर आज क्यों
मेरे हाथों की मेहंदी देख
आँख तुम्हारी
नम हो जाती है,
क्यों डर है तुम्हें
कि मैं तुम्हें भूल जाऊँगी ,
क्यों तुमने यह सोच लिया
कि मुझ पर तुम्हारा
हक नहीं होगा ,
मत भूलो बाबा
पैदाइश हूँ तुम्हारी ,
सदा मुझ पर
तुम्हारा हक होगा।
उस घर के साथ-साथ
इस घर का मान
भी बढ़ाऊँगी ,
बेटी हूँ तुम्हारी -
तुम्हारा आत्म सम्मान
मैं बचाऊंगी,
दोनों कुल की लाज को
मैं बढ़ाऊँगी ।

नेहा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

नारी

नारी ही राम की प्रीत है ,
नारी ही एक मधुर संगीत है ,
नारी ही लक्ष्मीबाई है ,
नारी ही जीवन की परछाई है ,
नारी ही अबोध बालिका है ,
नारी ही देश की कलिका है ,
नारी ही फूलों की फुहार है ,
नारी ही ईश्वर का
अमूल्य उपहार है|

सुमन
बी. ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

नारी की पीड़ा

नारी प्रताड़ना की
रही अधिकारी ,
मिले उसे हमेशा दुख ,
जीवन रहा कष्टों से पूर्ण ,
परंतु वे
हारी नहीं, भागी नहीं
किया सामना
उसने समाज की
हर पीड़ा का।
समय आने पर
दिखाया उसने

किया धारण
देवी काली का रूप,
संघर्षपूर्ण रहा
उसका हर पल,
देती रही
खुशियों का भंडार,
संजोती रही
दुखों का संसार ,
सहती रही खुद
दुखों का पहाड़ ,
परंतु देती रही हमेशा
खुशियों भरा संसार ,
समझो नारी की पीड़ा को ,
उसके दुखों को स्वयं
अपना मानो,
क्योंकि जब तक
नारी है
जीवन की नाव
पार लगने वाली है।
आज नारी हर क्षेत्र में
परचम लहरा रही है,
पुरुषों को पीछे
करती जा रही है।
शिक्षितमाँ ने किया
परिवार को शिक्षित
तो भला एक बेटी
क्यों ना हो शिक्षित?
साहस, बल, परिश्रम से
स्त्री देश के स्तर को
ऊंचा उठाती है
देश का भविष्य
उज्ज्वल बनाती है।

मीनाक्षी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

पहचान

हमारी पहचान क्या है?
हम सुंदर दिखते हैं
क्या यह हमारी पहचान है?
या हम जीवन में
सफलता प्राप्त कर चुके हैं
यह हमारी पहचान है ?

मेरी पहचान मैं ना जानूं,
क्योंकि बने समाज द्वारा
वह कई प्रकार से ,
कभी अच्छी ,कभी बुरी
बनी रही केवल
मेरी यही पहचान ।
परिवार में बनाओ
इज्जत-सम्मान ,
समाज में बनाऊं
अपनी पहचान ,
क्या यही है
मेरी पहचान ?
मनुष्य मैं बनूँ सफल
बनूँ मानवीय
हो यही पहचान|

कोमल नागर
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

बचपन

बचपन भी कितना
खूबसूरत था ,
ना कोई
फिकर होती थी ,
ना ही कोई दुख होता था ,
बस खेल ही खेल जीवन
की एक खूबसूरत
चीज होती थी |
अब भागदौड़ की जिंदगी में
खेल का कोई नाम नहीं,
बस कुछ पाना ही
एकमात्र लक्ष्य बन चुका है |
बचपन में चोट लगने पर
माँ संभाल लेती थी ,
पर अब चोट भी
छोटी बात ही लगती है |
बचपन में
एक-दूसरे के साथ
खेलना, साथ रहना
ही जीवन था |
ना किसी से
लड़ाई होती थी ,
पर अब, किसी की
छोटी सी बात भी
ताना ही लगती है |
सच में बचपन बहुत
खूबसूरत होता था
ना कोई लड़ाई ,
ना कोई
फिकर होती थी||

हरमन
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

हमारा देश

ना फख्र है,
ना मुझको नाज है ,
आज फिर
ये देश उदास है ।
कब तक जलाएँगे?
ये सड़को पर मोमबत्तियाँ,
आखिरकार बुझना तो
उसे एक बार है|
कब तक
रोती रहेगी हर माँ
और कब तक
होता रहेगा
बेटियों के साथ ऐसा . .
लोगों का काम
तो कहना,
वो कह कर
फिर चुप हो जायेंगे ,
लेकिन एक बार
उसकी माँ से
पूछ कर देखो कि
क्या बीतती है
उसके ऊपर,
आखिर कब तक
जियेंगे ऐसे डर के,
उससे लड़ना तो
एक बार है|
ना फख्र है ,
ना मुझको नाज है
आज फिर
यह देश उदास है|

अनीता कुमारी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

मैं तेरी क्या हूँ ?

तेरी टूटी हुई
आस हूँ मैं|
तेरी निगाहों की
प्यास हूँ मैं|
तुझ बिन अधूरी,
तेरे संग पूरी हूँ मैं |
मुझे आईने की
जरूरत नहीं ,
तेरी आँखों से
देखती हूँ मैं |
मुझे जहान की
जरूरत नहीं,
तेरे दिल में बसती हूँ मैं |
मैंने मुझ में
तुझको पाया है ,
तेरे मेरे प्यार ने
मुझे और तुझे 'हम' बनाया है |
डर लगता है
तुझे खो ना दूँ ,
तेरे बिन कहीं रो ना दूँ ,
तेरी जुदाई
सही जाएगी नहीं ,
तू नहीं तो मैं
खुद को भी मिटा दूँ |
चोट तुझे लगती है,
आँख मेरी रोती है|
गम में तू होता है,
सुख मेरा खोता है |
मुझे तुझ पर है
विश्वास अपार ,
तेरे जिस्म से नहीं,
रूह से है मुझे प्यार ||

कृतिका
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

माँ

माँ और माँ का
प्यार निराला,
माँ तूने ही तो
मुझे बचपन से
है संभाला|

घुटनों से रेंगते-रेंगते
पैरों पर चलना सिखाया|
माँ तूने ही तो
जीवन जीना सिखाया|
मुश्किलों से लड़कर,
आगे बढ़ना सिखाया|
माँ तूने ही तो
समाज में रहना सिखाया|
खुद ना पढ़कर
मुझे इतना पढ़ाया|
माँ तूने ही तो
मुझे कामयाबी की
ऊँचाई पर चढ़ाया|

काजल
हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष

बेटियाँ

ओस की बूंद
होती है बेटियाँ ,
माँ का सम्मान
और पिता का अभिमान
होती है बेटियाँ ,
घर किलकारियां से
भर देती है बेटियाँ,
माँ के साथ काम में
हाथ बंटाती हैं बेटियाँ,
घर को रोशन
करती है बेटियाँ ,
अपनी मंजिल को पाने
आगे बढ़ती हैं बेटियाँ ,
दुनिया की नजरों से
खुद को बचाती है बेटियाँ ,
गम में मुस्कुराती हैं बेटियाँ
कभीमाँ बनकर,
कभी बहन बनकर
कभी पत्नी बनकर,
सारे रिश्तों को
निभाती है बेटियाँ ,
अपने माता-पिता की
मजबूरी को समझ कर
अपने सपनों तक को
भूल जाती हैं बेटियाँ |
जिस घर में
बेटियाँ नहीं
वो घर बेटियों के
सुख से अनजान है,
बेटियों से ही
तो हर घर में
खुशियों का संसार है,
सबको हंसाती है बेटियाँ
और जाते-जाते
रुला जाती है बेटियाँ,
पराये घर जाकर भी
उसी परिवार के
रीति-रिवाजों में
ढल जाती हैं बेटियाँ
खुशियाँ हो या गम
हर समय
मुस्कुराती है बेटियाँ ,
परिवार को आगे
बढ़ाती है बेटियाँ |

उपासना
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

भाई

बहन के सपनों को
सच कर दे
वह होता है भाई ,
हर खुशी
अपनी बहन को दे
वह होता है भाई ,
हर तकलीफ
अपने ऊपर ले
वह होता है भाई ,
अपनी बहन के
गुस्से को प्यार समझे
वह होता है भाई

सोनिया
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

सच्चा मित्र

एक सच्चा मित्र
वही है जो हमें
कामयाबी तक
पहुंचा दें |
वह भी उतना ही
हकदार होता है,
हमारे सुख और
खुशी का
जितना कि हमारे
माता-पिता होते हैं |
सच्चा मित्र कभी भी
हमें गलत राह पर
जाने नहीं देता,
वह हर दम
हमारे साथ होता है|
एक सच्चा मित्र
कभी भी हमारा
बुरा नहीं चाहेगा ,
सहनशील खंबे की तरह
हमारे आगे
खड़ा रहेगा,
एक सच्चा मित्र कभी
पीठ पीछे
बुराई नहीं करता,
वह हमारा खुद से
परिचय करवाता है,
कभी दिखावे की
दुनिया में नहीं
जाने देता ,
जिंदगी में एक
सच्चा मित्र होना
बहुत आवश्यक होता है

शिवानी दुबे
हिंदी विशेष,द्वितीय वर्ष

किस्मत

सुना है कि
किस्मत की डोर
बाँधी जाती है,पर मुझसे तो
यह बाँधे नहीं बनती|
अब नहीं सहा जाता ,
यह किस्मतों का खेल |
अब नहीं सहा जाता
यह नसीबों का खेल|
अब यह सपने भी
गैरकानूनी से लगते हैं
क्योंकि अब हमारे सपने
तोले जाते हैं दूसरों के नसीबों से ,
खुद में ही सहमे- सहमे से लगते हैं ,
आज ये सपने, जायज है
इनका सहम जाना भी ,
क्योंकि इनके लिए
आज किस्मत
की डोर बाँधी जाती है,
पर मुझसे यह डोर
बाँधे नहीं बँधती ||

मोनिका सैनी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

लड़की होना आसान नहीं

लड़की होना आसान नहीं
क्योंकि
समाज में
उसे हर पल
परीक्षा देनी होती है,
चाहे वह
परिवार के लिए हो
या हो समाज के लिए|

लड़की होना आसान नहीं
क्योंकि
उसे हर पल,
हर समय
अपनी इच्छाओं
और सपनों को
तोड़ना पड़ता है,
छोड़ना पड़ता है|

लड़की होना आसान नहीं
क्योंकि
समाज और परिवार
उसे समझते नहीं हैं,
उसे आगे बढ़ने को
प्रोत्साहन नहीं देते,
जबकि लड़की
चलती है
सब लोगों के लिए
अपनी इच्छाओं और सपनों
को तोड़कर
खरी उतरती हैं
सब की उम्मीदों पर|

लड़की होना आसान नहीं
क्योंकि
लड़की और महिलाओं
को मिलता
सम्मान नहीं है|

लड़की होना आसान नहीं
क्योंकि
लड़की और महिलाओं
का अपना नाम
नहीं होता है?
वह पहचानी जाती है
पिता या पति के नाम से |

लड़की होना आसान नहीं
क्योंकि
अगर लड़की होना अभिशाप है,
तो क्यों मनुष्य
दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की
पूजा करते हैं?
क्यों उसको
अपना सिर झुकाकर
प्रणाम करते हैं?

लड़की होना अभिशाप नहीं
एक वरदान है,
क्योंकि बेटियाँ
हर किसी को नसीब
नहीं होती हैं,
जिसके वह घर आती हैं
उस घर के पिता
राजा होते हैं|

राजश्री
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

भारतीय वीर सैनिक

भारत का वीर सैनिक
कभी डरा नहीं,
कभी झुका नहीं।
सन 1857 में
रानी की तलवार चली थी,
हजारों मुगलों के साथ
तात्या तोपे ने भी
हुँकार भरी थी,
हिल गयी थी
अंग्रेजी हुकूमत की
तो नीव तभी |

स्वतंत्रता के बाद भी
आसान नहीं थी
सेना की राह,
1947 व 65 में
पाक ने कश्मीर पर
कब्ज़ा करने की
चाल चली थी,
तब भारत की सेना ने
उसकी रणनीति
ध्वस्त करी थी,
वीर सैनिक ने
भारत के मुकुट-मणि पर
न आँच आने दी|

जवाहर ने दिया था
हिंदी-चीनी
भाई-भाई का नारा
हमने तो सदैव चीन को
अपना दोस्त ही माना
सोचा भी न था
तभी चीन ने 1962 में
जंग छेड़ दी थी
हम कमज़ोर तो पड़े,
पर हिम्मत जुटा ली थी|

शत्रु पर पलटवार कर
1971 में बांग्लादेश को
आज़ादी दिला दी
हार न हमने मानी थी|

आज भी आसाम,
अरुणाचल, सिक्किम हो
या हो कच्छ का रन
या हो सियाचिन की ठण्ड
सचेत रहता है
भारतीय सैनिक
देश की रक्षा के लिए
हर दम
मर-मिटता है वो|

तुम याद उसे रखना
अपने घर मंदिर में,
एक दीप
उसके नाम का भी
प्रज्ज्वलित करना,
आशीष माँगना भगवान से
दुनिया में हो सदैव शांति,
स्वतंत्र वातावरण में
सांस लें सभी,
देनी न पड़े
किसी सैनिक को
जान कभी |

प्रशंसा राजपूत
बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

प्रकृति

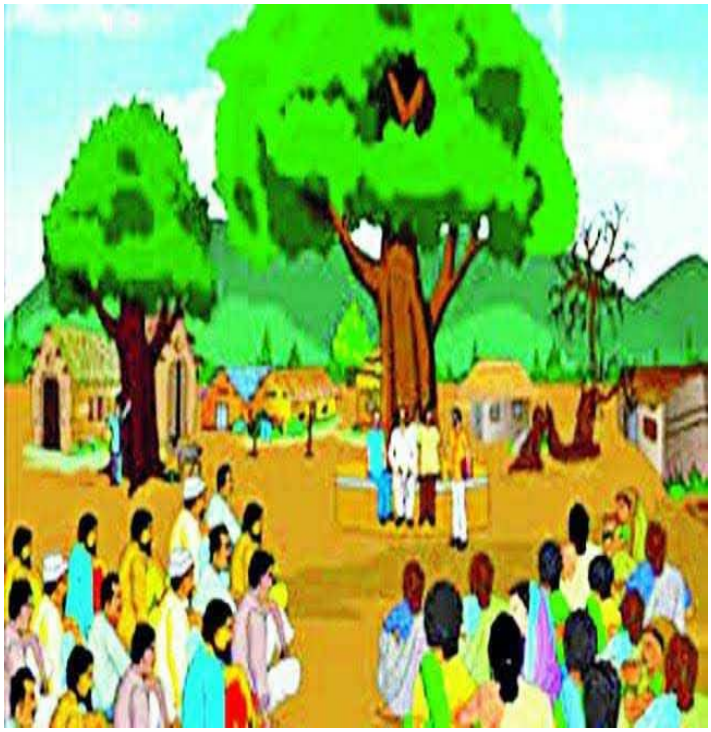

ये प्रकृति है
पूज्य पुनीता, अन्नपूर्णा,
सलिल प्रदायिनी,
जीवनदायिनी,
इसकी गोद में
पल-बढ़कर भी,
हमने भुला दिए
इसके उपकार सभी।
बिगड़ रहा
पृथ्वी का संतुलन,
आया परिवर्तन
जलवायु में,
पक्षियों के प्रवास में भी।
थे जहाँ पेड़- पौधे,
घने जंगल, अब है
इमारतें व सड़कें ही।
अपने निलय-निर्माण हेतु
हमने काट दिए
वन-उपवन,
मिट गए खग, मृग, विहग
सब के घर।
जब पेड़ न रहेंगे,
चिड़िया घोंसले
कहाँ बनायेंगी?
पपीहा कहाँ बोलेगा?
कोयल कहाँ गायेंगी?
जंगल की कहानियाँ
अब सीमित ही रह जायेंगी।
औधोगीकरण व यातायात
के संग बढ़ रहा है
भीषण-प्रदूषण,
नष्ट हो रहा पर्यावरण
व प्राकृतिक सौन्दर्य।
कारखानों के जहरीले पदार्थ
व रेत के अवैध उत्खनन से
नदियाँ लुप्त होती जा रहीं हैं।
ऐसी अनेक नदियाँ
अब इतिहास ही
रह जाती हैं।
प्राक्रतिक आपदा
जैसे- सुनामी, आँधी- तूफ़ान,
भूकंप, ओलावृष्टि,
महामारी या जंगल में आग
इनकी पुनरावृति का
कारण है मनुष्य तेरा स्वार्थ,
तूने अपने स्वार्थ के लिए
किया कुदरत का इस्तेमाल।
ओ! मनुष्य,
अपना अब तू कर्तव्य समझ,
वृक्षरोपण व पर्यावरण
का संरक्षण कर।
प्रकृति को मान अपनी माता,
आदर सदैव इसका कर।

प्रशंसा राजपूत
बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

समाज

देखो-देखो
समाज में क्या हो रहा है?
एक दूसरे को देखते नहीं लोग,
आपस में बोलते नहीं लोग,
बस अब अपनी जिंदगी में
व्यस्त हैं लोग,
अपने को आगे ले जाने के लिए,
कुछ भी करते हैं लोग,
गलत हो या सही
कुछ नहीं सोचते लोग,
बस सोचते हैं अपना भला
सब जाए पीछे ,
मैं जाऊं आगे
इसी कारण लोगों में
अहंकार भर गया है,
देखो-देखो
समाज में क्या हो रहा है?
इसी कारण जिंदगी
नाजुक सी हो गई है,
बस सो- विचार से ही
बीमार हो जाते हैं लोग,
रिश्ते अब रिश्ते नहीं रहे
बस नाम के लिए हैं
इसलिये रिश्ते अब
निभाता नहीं कोई,
देखो-देखो
आज समाज की
हालत है यही
जाने कब होगी ये सही

आरती
बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

आ उड़ चलें

आ उड़ चलें
पीछे छोड़ इन बंदिशों को,
तोड़कर ताले रीतियों के,
पीछे छोड़कर इस
समाज के सवालों को
आ उड़ चलें
तुम्हें भी तो हक है
दुनिया देखने का,
तुम्हें भी तो हक है
जीने का जिंदगी
अपने तरीके से,
क्यों रहें सिमटकर?
क्यों ना किया जाए?
पूरा उन सपनों को,
देखा था जिन्हें
दिन के उजाले में
आँखें खोल कर,
क्यों छोड़ दिया बीच में
सपना अफसर बनने का
चल छोड़, जो बीत गया,
देख नये सपने अब
पूरा कर उन्हें
और जी ले दोबारा,
पर हालत यह है माँ की,
बोलती है वह
पर सुनता कोई नहीं,
चाहती हूँ मैं
कि पूछूं माँ से
क्यों ऐसी है वह?
पर पूछ नहीं पाती
माँ ,चाहती हूँ
तुमसे कहना
आ उड़ चलें
पीछे छोड़ इन बंदिशों को
तोड़कर ताले
रीति-रिवाजों के
आ उड़ चलें|

मानसी यादव
बी ए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

मनुष्यता

आज मनुष्य की हालत
पहले से भी गई गुजरी है,
आज मनुष्य को
अपने में ही रहने की
आदत पड़ गई है।।
नहीं रही है
मनुष्यता क्या?
अब हमारे बीच में,
ऐसा ना हो जाए
कि खो जायें हम
इस भीड़ में,
हमको अब
इस भीड़ की
आदत नहीं बनानी है,
मनुष्यता की यह बूटी
सब में ही फैलानी है।
एकता में अनेकता
कहते हैं जब आप
तो करते भी हो काम
क्या रह कर के
तुम साथ दो।।
भूल जाओ,
यह तेरा-मेरा
हम सबका
यह देश है
देश में
मनुष्यता को बढ़ाना
अब तुम्हारा भी
उद्देश्य है।।

अनीता कुमारी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

हमारा भारत

गांधी हर युवा है,
न जाने क्यों
फिर भी दुश्मनों को
हम से लोहा लेना है,
डिजिटल हो रहा है
भारत अब,
बदल रहा है
भारत अब,
इसरो की चांद पर
जाने की कोशिश जारी है ,
फिर भी दुश्मनों को देखो
करते युद्ध की तैयारी हैं,
कश्मीर लेकर हमने
उनकी हालत जो बिगाड़ी है ,
भारत को संसार भर में
नंबर वन बनाने की
जंग जारी है|
अब भारत की बारी है |

वंदना मिश्रा
हिंदी विशेष,द्वितीय वर्ष

सफलता

सफलता दूर नहीं है,
अगर मन में तुम
यह ठान लो |
ऊँचाई के शिखरों पर
तुम अपना नाम
भी टांक दो।
लड़खड़ा कर
मनुष्य चलता है
तो ही सीखता,
दुनिया में किसी को
खैरात में मिलती
नहीं है सफलता ।
उसको पाना ही है तो
सीखना होगा
लगातार बढ़ना,
सफल हो जाओगे
अगर तुमने
अपना लक्ष्य
निर्धारित कर दिया
और उस लक्ष्य की खातिर
तुमने समय गँवाना
छोड़ दिया,
ऐसे ही महापुरुष
कोई नहीं बन जाता है,
कड़ी मेहनत
से ही तो वह
सफलता पाता है।
ख्वाबों को हकीकत में
बदलना तुम सीख लो,
उसके लिए
मेहनत करना
तुम अब सीख लो।।
अभी नहीं,
तो कभी नहीं
तुमसे वह हो पाएगा,
इसीलिये
तो कहते हैं
मनुष्य का जीवन मिला है,
सफलता पाने के लिए,
इसको तुम
सार्थक कर दो
सफलता पाने के लिए

अनीता कुमारी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं निरुपाय
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाये

जयशंकर प्रसाद

गद्य

सत्य, आस्था और लगन जीवन सिद्धि के मूल हैं।
-अमृतलाल नागर

स्कूल से कॉलेज का सफर

जब मैंने अपनी 12वीं कक्षा की परीक्षा दी थी तो मैं बहुत घबराई हुई थी कि मेरा परिणाम कैसा आएगा? लेकिन जब मेरा परिणाम आया तो मैं बहुत खुश थी कि मेरे बहुत अच्छे अंक आए थे परंतु मेरे अंदर एक डर भी था कि इतने अंक आने के बावजूद भी दिल्ली विश्वविद्यालय में मेरा दाखिला हो पाएगा या नहीं क्योंकि हम सब जानते हैं कि दिल्ली विश्वविद्यालय में दाखिला लेना हर युवक-युवती का सपना होता है। मुझे पहले ही कट ऑफ में मैत्रेयी कॉलेज में दाखिला मिल गया जब मैं यहाँ आई तब मैंने पाया कि यहाँ के बच्चे और अध्यापक सभी लोग बहुत अच्छे हैं, मदद करने वाले हैं | यहाँ आकर मुझे महसूस ही नहीं हुआ कि मैं एक नयी जगह आई हूँ| सब कुछ जाना-पहचाना सा लगता है| यहाँ के सब लोग अपने से लगते हैं |यहाँ के अध्यापक बच्चों को एक सही दिशा दिखाने के लिए साथ-साथ उनके अंदर छुपी खूबियों को बाहर निकालकर ऊँचाई पर पहुँचना भी सिखाते हैं अतः मैं यही कहना चाहूँगी कि मेरा अभी तक का सफर बहुत अच्छा व सुहाना रहा।

हिमाँ शी

बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

मेरे पापा-मम्मी

मेरे पापा दुनिया के सबसे प्यारे इंसान हैं, वो मुझसे झूठ बोलते हैं कि उन्हें स्मार्टफोन चलाना नहीं आता ताकि मैं स्मार्टफोन चला सकूँ । वह दिन रात कठिन परिश्रम करते हैं , ताकि वह मेरी सारी इच्छाओं को पूरी कर सकें । मेरे माता-पिता मेरे लिए भगवान हैं क्योंकि वह मुझे कोई भी कष्ट नहीं होने देते हैं । मुझे अगर ज़रा सा भी कष्ट होता है तो मेरे माँ -पापा दुखी से हो जाते हैं। इस दुनिया में सबसे ज्यादा कोमल दिल माँ-पिता का होता है और इस दुनिया में अगर कोई सच्चा प्यार करता है तो सिर्फ माँ-पिता ही हैं |खुशनसीब हैं वह लोग जिनके पास माता-पिता दोनों हैं क्योंकि उनके पास स्वयं देवी-देवता हैं| धन्य हूँ, मैं जो मुझे माता-पिता दोनों मिले| इस संसार में वह मेरे साथ हैं| मेरे पापा मम्मी मुझसे निस्वार्थ प्रेम करते हैं और मैं इस दुनिया मैं सबसे ज्यादा प्रेम और विश्वास अपने पापा-मम्मी पर करती हूँ ।

राजश्री

विशेष हिन्दी, द्वितीय वर्ष

पर्यावरण

पर्यावरण वह होता है जिसमें हम निवास करते हैं, खाते हैं, पीते हैं, एक साथ रहते हैं। ठीक ढंग से जीवन जीने के लिए पर्यावरण का साफ एवं शुद्ध होना अत्यंत आवश्यक है परंतु दिन-प्रतिदिन हमारे पर्यावरण का विनाश होता जा रहा है। इस पर्यावरण में दूषित करने वाली गैसों का मिश्रण मिलता जा रहा है। वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण के कारण पर्यावरण दूषित होता जा रहा है इसके कारण मनुष्य गंभीर बीमारियों के शिकार बनते जा रहे हैं। एक स्वच्छ वातावरण में ही व्यक्ति का विकास हो सकता है अतः पर्यावरण का स्वच्छ होना अत्यंत आवश्यक है । आज हम घर के लिए पेड़ों की कटाई कर रहे हैं जिससे वातावरण को हानि हो रही है। पेड़ों के कारण हमें बहुत सारे लाभ है परंतु पेड़ों के कटने से यह लाभ हानि में परिवर्तित होता जा रहा है। पेड़ों से हमें फूल, फल, सब्जियां, औषधीय, वायु , ऑक्सीजन इत्यादि प्राप्त होती है परंतु वृक्षों की कमी से इन वस्तुओं की कमी होती जा रही है। हमें वातावरण को बचाने ,स्वच्छ करने के लिए कदम उठाने चाहियें। हमें अपने आसपास के क्षेत्रों का ध्यान रखना चाहिए। पेड़ों को लगाना चाहिए । शौचालय को प्रतिदिन साफ करना चाहिए । स्वच्छ भोजन ग्रहण करना चाहिए| पर्यावरण का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। यह जीवन को जीने का आधार है। यदि पर्यावरण ही स्वच्छ नहीं रहेगा तो मनुष्य कैसे रहेंगे ,कैसे जियेंगे । स्वच्छ पर्यावरण में ही मनुष्य का विकास संभव है ।

दिव्या जैन

बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

तुझसे पहली मुलाकात

तुझसे पहली मुलाकात की बात सोच कर मन में एक अजीब सी मुस्कुराहट आती है और अपनी अबोधता का स्मरण होता है| उस क्लास में जब तू नहीं थी तो अपना एक गैंग था| जब तू पहली बार क्लास में आई तो तेरे कपड़ों पर, तेरे बालों पर हम सब कितना हँसे थे, तुझे कितना परेशान किया था| उस वक्त इस बात से अनजान थी कि यह लड़की जो आज हमारे लिए मजाक का विषय है कल वह मेरी जिंदगी का एक प्यारा सा हिस्सा बन जाएगी| एक ऐसा हिस्सा जिससे मैं अपने दिल की हर बात किसी भी समय बता सकूँगी| चाहे वह रात के दो ही क्यों ना बज रहे हों ,बस तुझे एक फोन कॉल करना और कहना कि यार मैं बहुत बोर हो रही हूँ और हमेशा की तरह तेरा यही कहना कि चल बतियाते हैं |हम रोज बात करते हैं पर हमारी बात खत्म ही नहीं होती| हर रोज बात करने के लिए हमारे पास नया विषय होता है ,चाहे वह विषय यह ही क्यों ना हो कि यार तुझे पता है आज मैंने कुछ नहीं खाया है और तेरा वहाँ से कहना कि एक दिन नहीं खायेगी तो कोई पतली थोड़ा ही हो जाएगी| यह सब इसलिए कहना चाहा क्योंकि तू मेरी छोटी सी जिंदगी की पहली बेस्ट फ्रेंड है और ऐसी मित्र है,जो मेरे लिए हर कदम पर खड़ी होती है|

शुभ्रा त्रिवेदी

हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष

विद्यालय

विद्यालय एक ऐसा स्थान है जो प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में एक अहम भूमिका निभाता है। उसके खत्म होने पर सभी विद्यार्थी इस तरह से दुखी हो जाते हैं मानो उनके जीवन का कोई अंश छूट गया हो| हर बच्चे की तरह मेरे साथ भी यही हुआ। विद्यालय छूटा तो पुराने दोस्त भी छूटे। इसके बाद मेरा जीवन कुछ अलग तरह का हो गया , दोस्तों से दूर, परिवारों से दूर, घर से दूर| एक अनजाना शहर था और थी कॉलेज की जिंदगी |कॉलेज के लिए ना जाने क्या-क्या पीछे छोड़ चले थे हम। ऐसा लग रहा था मानो कुछ नया पाने के चक्कर में पुरानी चीजों को बहुत पीछे छोड़ दिया था। कॉलेज आए, कॉलेज की एक नई दुनिया से परिचित हुए, जो विद्यालय की दुनिया से बहुत अलग थी|

कॉलेज में नये अध्यापकों से मिले और नये दोस्तों से भी मिले । नये विद्यार्थियों से मिलकर काफी अच्छा लगा ,उनकी संस्कृतियों को जानने का मौका मिला| परंतु घर से दूर रहना जितना सोचने में आसान लगता है वास्तव में उतना ही कठिन होता है। अब ना यहाँ माँ -बाप की डाँट पड़ती है और ना ही कोई खाना खाने के लिए जबरदस्ती करता है। यहाँ आकर हमें अपने माँ -बाप की असली कीमत का पता चलता है। दुनिया में चाहे कितने भी अच्छे दोस्त मिल जाएँ लेकिन विद्यालय के दोस्तों की बराबरी कोई नहीं कर सकता।

काजल

बी. ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

मेरी पहली रेल यात्रा

मेरी पहली यात्रा बहुत अच्छी रही| मैं बिहार के अपने गांव से ट्रेन में सफर करके दिल्ली आ रही थी| मैं छह साल की थी, जब ट्रेन में चढ़ी तब मुझे थोड़ा डर लग रहा था, लेकिन जब ट्रेन चलने लगी तब धीरे-धीरे मेरा डर भी निकल गया|
मैं खिड़की के पास बैठी थी, जब ट्रेन चल रही थी तो ऐसा लग रहा था कि ट्रेन के साथ-साथ पेड़ पौधे और रास्ते में आने वाले मकान भी चल रहे हैं, साथ ही ठंडी-ठंडी हवा भी लग रही थी। ट्रेन में जैसे -"चाय वाला- चाय ले लो ,चाय ले लो" बोल रहा था | वहाँ और भी बहुत सी चीजें बिकने के लिए आ रही थीं, मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे हम पिकनिक मना रहे हैं| सारा परिवार एक साथ मिलकर इस यात्रा का आनंद ले रहा था ।

मैं बहुत खुश थी जब ट्रेन सुरंग से जाती तो ऐसा लगता था कि हम किसी गुफा में जा रहे हो| जब ट्रेन बड़े-बड़े पुलों से गुजरती थी, तो उसके नीचे बहती हुई नदी बहुत अच्छी लगती थी| कभी-कभी लगता था कि ट्रेन चलते-चलते नदी में ना गिर जाए ।

रात को थोड़ी-थोड़ी रोशनी आती थी या ट्रेन कभी जंगलों से गुजरती थी, तब बहुत डर लगता था लेकिन मेरी यह पहली यात्रा बहुत रोमाँ चक रही, क्योंकि मैंने पहली बार बाहर की दुनिया को देखा, उसे कुछ कुछ समझा| मुझे यह यात्रा हमेशा याद रहेगी|

अमीषा

बी. ए. प्रोग्राम ,प्रथम वर्ष

महिलाओं का योगदान

देश में महिलाओं का सम्मान सर्वोपरि होना चाहिए क्योंकि किसी देश की सामाजिक स्थिति उसकी महिलाओं की स्थिति पर निर्भर करती है | आज के समय में जिस प्रकार से महिलाओं ने धीरे-धीरे हर क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखा कर खुद को सिद्ध किया है | उससे यह साबित होता है कि महिलाओं को किसी भी प्रकार से कमज़ोर या कम नहीं आँकना चाहिए| जिस प्रकार से महिलाएँ स्वयं से प्रथम देश को समझने लगी हैं, उसी प्रकार देश को भी महिलाओं के लिए आदर्श स्थापित करना चाहिए | महिलाएँ सर्वगुण संपन्न होती हैं वह एक माँ ,बहन, बेटी और पत्नी के रूप में पुरुषों के साथ कदम-कदम पर खड़ी रहती हैं| देखा जाए तो आज के समय में महिलाएँ ही देश के नाम को रोशन कर रही हैं, फिर चाहे वह कोई भी क्षेत्र हो जैसे- खेल, शिक्षा या फिर चाहे देश की संसद ही क्यों ना हो, महिलाएँ सबसे आगे हैं | इन्हीं के मध्य देखें तो अंतरिक्ष पर जाने वाली हमारी प्रथम महिला कल्पना चावला ने देश का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया था | इसी प्रकार खेल में मैरी कॉम ने अपना कैरियर बनाया है| इन्हीं महिलाओं को देखते हुए जो लोग अपने समुदाय की महिलाओं को कम समझते थे या फिर उनको सिर्फ घर के काम के लिए ही बना समझते थे, उनकी सोच में बदलाव आया है | यदि इन महिलाओं को देखते हुए भी किसी समाज या समुदाय को यह लगता है कि महिलाएँ सिर्फ घर तक ही सीमित होनी चाहिएँ या उनको पुरुषों के दबाव में ही रहना चाहिए तो यह सोच निंदनीय है|महिलाओं का पढ़ना-लिखना और आगे बढ़ना समाज के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि जब महिलाएँ खुद इतनी पढ जाएँगी तो फिर वह अपने बच्चों की पढ़ाई में अपना योगदान देकर उनका भविष्य उज्ज्वल कर सकती हैं| आज के समय में बच्चे तभी सफल होते हैं जब माता-पिता उन्हें आगे बढ़ने को प्रेरित करते हैं | इसलिए मेरा विचार हमेशा से यही है कि महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए | यह माना जाता है कि जब घर की एक महिला या बेटी पढ जाती है तो वह पूरे घर की स्थिति बदल देती है, क्योंकि वह अपनी शिक्षा का उपयोग परिवार के हित में करती है | इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को महिलाओं का सम्मान करना चाहिये|

पल्लवी

बी. ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

कॉलेज का पहला दिन

जब मैं कॉलेज में पहले दिन गई तो मुझे वहाँ सब कुछ नया-नया दिख रहा था। वहाँ सभी अध्यापिकाएँ तथा सहपाठी उपस्थित थे ,परंतु जब मैंने उन लोगों से बात करनी शुरू की तो मुझे एक पल के लिए भी ऐसा अनुभव नहीं हुआ कि मैं उन लोगों को नहीं जानती हूँ या फिर उन लोगों से पहली बार मिली हूँ। कॉलेज में सभी लोग एक-दूसरे से बहुत अच्छे तरीके से बात करते हैं। अगर हमें किसी भी चीज की जरूरत होती है तो वे लोग किसी ना किसी तरीके से हमारी मदद करते है। यह बात मैंने अपने कॉलेज में आने के बाद सीखी है। कॉलेज में पहले दिन जब मेरी पहली कक्षा लगी तो उस कक्षा में जो अध्यापिका थीं उन्होंने हम लोगों से बहुत अच्छे से बात की और यह भरोसा दिलाया कि अगर हमें कभी भी उनकी मदद की जरूरत होगी तो वह अवश्य ही हमारी मदद करेंगी । जब उनसे बात हुई तो एक पल को लगा कि मैं अपने स्कूल की अध्यापिका से बात कर रही हूँ क्योंकि इन्होंने भी कहा कि हमें हमेशा सच का साथ देना चाहिए | यदि हम कड़ी मेहनत करेंगे तो हमेशा सफलता मिलेगी और मैं हर परिस्थिति में तुम्हारा साथ दूँगी लेकिन तुम लोग हमेशा सत्य का साथ देना।

रोशनी परिहार

बी ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

मेरा संघर्ष

मेरा नाम आशी संगल है। मैं छोटे से शहर नामक शामली से हूँ। मैंने अपनी स्कूल की जिंदगी पूरे आनंद के साथ बिताई । मेरे माता-पिता ने मुझे हर सुविधा दी पर फिर भी मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता था। हमेशा 60% या 70% से ऊपर अंक कभी नहीं आए। ऐसा शायद इसलिए हुआ क्योंकि मुझे पढ़ाई का महत्व नहीं पता था। पर मैं अच्छे कॉलेज में आना चाहती थी तो बारहवीं कक्षा में कड़ी मेहनत की ,खूब पढ़ा।

मैंने आर्ट्स के विषय लिए थे,मैं जिस स्कूल में पढ़ती थी वहाँ पर आर्ट्स स्टूडेंट को बेकार माना जाता था। पर मैंने अपना हौसला बनाए रखा और मेरी मेहनत रंग लाई। जब मेरा रिजल्ट आया मैंने 90% अंक पाए थे और जो लोग मुझे कहते थे कि मैं पढ़ नहीं सकती, उस दिन उनका मुंह बंद हो गया। आज मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के मैत्रेयी कॉलेज में पढ़ रही हूँ| अब मुझे विश्वास है कि मेरी एक साल की मेहनत ने मुझे यहाँ पहुंचा दिया तो अगर आगे मैं ऐसी ही मेहनत करूँगी तो और ऊँचाईयों को छू लूँगी|

आशी संगल

बी ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

मेरी पहली यात्रा

मेरी पहली ट्रेन यात्रा जो मैंने अपने परिवार के साथ की , एक यादगार यात्रा रही| ट्रेन में परिवार के साथ यात्रा करना ऐसा प्यारा अनुभव हो जाएगा, मैंने सोचा नहीं था| सफर की पहली रात मुझे हमेशा याद रहेगी क्योंकि मैं ट्रेन में जाने के लिए बहुत ही उत्साहित थी| स्टेशन पर पहुंच कर मैंने देखा कि वहाँ टिकट लेने के लिए लंबी-लंबी कतारें लगी हुई थीं| मैंने सोचा कि अब हमारा सफर देर से शुरू होगा क्योंकि टिकट की कतारों में अधिक समय व्यतीत होगा, लेकिन टिकट जल्दी ही मिल गए और हम

अपने डिब्बे में पहुंचे| अंदर काफी भीड़भाड़ थी ,धक्का-मुक्की भी हो रही थी| सभी लोग अपना-अपना सामान लेकर धीमी गति से आगे बढ़ रहे थे पर फिर भी कुछ समय पश्चात ही हम सब अपनी सीट पर पहुंच गए| मैं अपने छोटे भाई और बहन के साथ ऊपर बनी जालीदार सीट पर चढ़ गई| ऊपर बैठकर हम सबकी ओर देख रहे थे| ट्रेन चलने लगी थी, हम खिड़कियों से बाहर देख रहे थे परंतु रात होने के कारण हमें कुछ दिखाई न दिया | हम तीनों भाई-बहन एक दूसरे से झगड़ रहे थे| हम अपनी-अपनी सीट पर लेटना चाहते थे पर तीनों लेट नहीं पा रहे थे| फिर हम झगड़ा करने के बाद खाना ढूंढने लगे| अपनी बड़ी बहन से खाना लेने के बाद उसे खाकर हमने खाने का डिब्बा अपने पास रख लिया और एक -दूसरे की खिंचाई करने लगे थे| हमारे सामने वाली सीट पर फौजी बैठे थे जो हमें देख कर मुस्कुरा रहे थे| हमें शांत करने के लिए उन्होंने एक रंग-बिरंगे कागज का बना सुंदर गुलाब का फूल दिया, लेकिन एक गुलाब का फूल हम तीनों को ही चाहिए था| जिसे लेकर हम फिर झगड़ा करने लगे, झगड़ा करने के बाद हमने फूल को सीट पर लगा दिया, जिसे हम तीनों भाई-बहन केवल देख सकते थे| कुछ समय पश्चात हम अपनी-अपनी जगह पर चादर ओढ़ कर सो गए| बीच में नींद खुली तो हमने देखा कि सभी लोग शांत अवस्था में सो रहे थे| जब सुबह जागे तो पता चला कि हम अपने गांव पहुंचने वाले हैं हम सभी उतरने की तैयारी करने लगे| कोई चप्पल पहन रहा था, तो कोई बाल बना रहा था| सभी लोग अपनी तैयारी में व्यस्त थे| ट्रेन स्टेशन पर पहुँची और काफी धक्का-मुक्की के बाद हम ट्रेन से उतर गए| यात्रा का मेरा पहला अनुभव बेहद अच्छा रहा | अब मैं ट्रेन में यात्रा करना ही पसंद करती हूँ ।

सफ़िया रहमान अंसारी
बी ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

हम

जीवन कितने संघर्षों से भरा होता है, यह उसे जीने वाला ही जानता है| मेरे बचपन से लेकर आज तक मेरे जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आई जिनका मुझे सामना करना पड़ा है | मेरी माँ बाहर जाकर काम करती हैं इसलिये मुझे घर काम का करना पड़ता था| स्कूल जाना भी मेरी अपनी ही जिम्मेदारी थी ,ऐसी ही होती है ज्यादातर लड़कियों की ज़िन्दगी | उन्हें घर के कार्य से लेकर भविष्य बनाने तक पहुँचने में कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं| आजकल 18-19 वर्ष की उम्र में ही ऐसा लगता है कि पता नहीं हम कितनी दिक्कतों का सामना कर चुके हैं |इससे अच्छा तो बचपन ही था जहाँ हमें दुनियादारी से कोई मतलब नहीं हुआ करता था। परंतु अब हमें कुछ भी करने से पहले समाज, परिवार सभी को ध्यान में रखना होता है। बचपन में किसी वस्तु को पाने के लिए हम रोते थे और चाहते थे कि माँ-पापा देख लें और वह वस्तु हमें दिला दें। परंतु अब हम अकेले में रोते हैं और यह उम्मीद करते हैं कि कोई देखे ना और हंसते हुए सबके सामने आते हैं जिंदगी ऐसे भी व्यतीत करनी पड़ती है अब इसका एहसास हुआ।

पिंकी कुमारी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

बगीचा

यह उद्यान है जो मन को बहुत भाता है | जो प्रकृति के रंग बिरंगे चित्र दिखाता है | हरे-भरे पेड़ों ,रंग-बिरंगे फूलों से लदे बगीचे मन को अत्यधिक सुहावने लगते हैं और प्रकृति के मूल आभूषण रूप प्रतीत होते हैं | यह मन की चिंताओं व बाधाओं को दूर कर शीतलता व शांति उत्पन्न करते हैं| प्रकृति का सौंदर्य वह है जो पृथ्वी को सुंदरता प्रदान करता है| साथ ही पक्षियों का चहचहाना व नदियों का मोतियों सा चमकना इसकी शोभा को और अधिक बढ़ाता है | प्रातः काल सूर्य की किरणें जब नदियों व फूलों पर पड़ती हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो वह अलग ही ढंग से खिलखिला उठे हैं |एक नई धुन में प्रकृति का हर एक कण, जल, पेड़-पौधे, फूल- पत्तियाँ, पशु-पक्षी आनंद में भर कर नाच रहे हैं व गुनगुना रहे हैं| प्रकृति में बगीचा भगवान द्वारा दिया गया वह वरदान है जिसके पास रहने व उससे मित्रता बढ़ाने अर्थात प्रेमभाव रखने पर वह अपनी ओर प्रतिदिन आकर्षित करता जाता है और मन को अलग ही सुकून व शांति प्रदान करता है | उसमें पशु-पक्षियों का आना-जाना लगा रहता है, जो उसकी जीवंतता को दर्शाता है|

नंदनी वर्मा
बी. ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

यात्रा वृतांत

बुधवार का दिन था | मौसम काफी सुहावना था और अच्छी धूप थी | साथ ही मेरे परिवार के सभी सदस्यों की छुट्टी भी थी | इसलिए हम सब ने इंडिया गेट घूमने का कार्यक्रम बनाया | हम दिल्ली में ही रहते हैं इसलिए इंडिया गेट घूम कर रात को समय से घर आया जा सकता है | हम सब जल्दी से अपना काम खत्म करके तैयार होने लगे | सभी बहुत खुश और उत्साहित थे | हमने पहले कभी इंडिया गेट नहीं देखा था, इसलिए सभी उत्तेजित और जिज्ञासु थे|सभी लोग 9 बजे तक तैयार हो गए | फिर हम सब अर्थात मैं, मेरी छोटी बहन, पापा और मम्मी बस स्टॉप पर बस पकड़ने के लिए गए | कुछ समय बाद हमें बस मिल गई | हमने ड्राइवर से टिकट ली और बस में बैठ गए | हम चारों बहुत प्रसन्न थे | हमने बस की खिड़की से दिल्ली की सड़कों, इमारतों तथा आसपास के नजारों को देखा | लगभग आधे घंटे में ही हम इंडिया गेट पहुंच गए,समय इतनी जल्दी बीता कि हमें पता ही नहीं चला | बस से उतरकर हमने दूर से

इंडिया गेट को देखा | वह बहुत आकर्षक लग रहा था और साथ ही हमें गर्व की अनुभूति भी करा रहा था | एक पल के लिए मेरे मन में विचार आया कि यह किसने और क्यों बनवाया? यह किस पत्थर से बना हुआ है?यह कितने वर्ष पूर्व बना? इसको बनवाने का क्या कारण रहा होगा आदि अनेक प्रश्न मेरे दिमाग में घूमने लगे | इतने में ही मेरी माँ ने मुझे आवाज दी और हमने सड़क पर पैदल चलना आरंभ किया क्योंकि इंडिया गेट बस स्टॉप से थोड़ी ही दूरी पर था | सड़क पर अनेक दुकानें लगी हुई थीं| आइसक्रीम वाला आवाज लगा रहा था, कुछ लोग फोटो खींच रहे थे | हम धीरे-धीरे नजारा देखते हुए आगे बढ़ रहे थे | इतने में एक 10 साल की लड़की फूल लेकर हमारे पास आई, पर हमने इंकार कर दिया क्योंकि हमें उनकी जरूरत नहीं थी | फिर आगे जाकर हमने निकट से इंडिया गेट को देखा|मेरे हृदय में एक तूफान उठा मानो मैं मैं स्वर्ग में किसी विशाल, सुंदर, वैभवशाली इमारत के पास खड़ी हूँ | फिर मैंने देखा कि इस पर शहीदों के नाम लिखे हुए हैं | बचपन में मम्मी कई बार अनेक वीरों की कहानियाँ सुनाया करती थी और तभी एक बार उन्होंने इंडिया गेट के बारे में भी बताया था, किंतु अब कुछ-कुछ ही याद था | फिर हमने अपने फोन से अनेकों फोटो लीं और इंडिया गेट को बड़ी देर तक धैर्य से देखा | काफी देर वहाँ घूमने के बाद हमने वापस आने के बारे में सोचा | हम वहाँ से बस स्टॉप की तरफ जाने लगे | रास्ते में हमने गोलगप्पे और आइसक्रीम का स्वाद लिया | लगभग 10 मिनट में हम बस स्टॉप पर पहुंचे | फिर हमने बस पकड़ी और लगभग 45 मिनट में घर पहुंच गए | सभी बहुत थके हुए थे | सभी ने पानी पिया और अपने- अपने कमरे में जाकर उन तस्वीरों को देखने लगे जो हमने आज फोन से ली थीं | सभी के मुख पर फिर से वही खुशी आ गई और फिर हम सभी ने कुछ समय आराम किया | फिर हमने खाना खाया और सो गए | वह दिन सच में बहुत महत्वपूर्ण और यादगार था |

संजना
बी. ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

हमेशा खुश रहो

मेरी जिंदगी का एक ही फॉर्मूला है कि चाहे जो हो जाए हमेशा खुश रहो,क्योंकि एक छोटी सी मुस्कुराहट ही हमें आगे बढ़ने की आशा देती है | अभी भी मैं मुस्कुराहट के साथ ही अपने विचार प्रकट कर रही हूँ | यह कहा भी गया है 'लाफ्टर ईज़ द बेस्ट मेडिसिन ऑफ एनी डिजीज' अर्थात हँसना-मुस्कुराना ही किसी भी बीमारी की मुख्य दवा है | मैं हमेशा ही अपने परिवार व दोस्तों को यही फार्मूला अपनाने के लिए कहती हूँ | मैं हमेशा ही अपने घर, कॉलेज, पड़ोस में लोगों को हँसाने के लिए कुछ ना कुछ चुटकुले सुनाती हूँ | उन्हें हँसाने के लिए मैं वह भी बातें बताती हूँ जो मेरे साथ कभी ना हुई हो | दूसरों को हँसते देख मुझे बहुत ही अच्छा लगता है| हालांकि मेरी मातृ भाषा हरियाणवी है जो कुछ लोगों को पसंद नहीं है| लेकिन आजकल हरियाणवी एक ट्रेन्ड बन गई है | मेरी हरियाणवी की एक लाइन पर कॉलेज ग्रुप के सभी लोग हंसते हैं वह है- भोकला क्यों पाड रही है मतलब रो क्यों रही है ? मैं बस इतना ही कहना चाहूँ गी कि मेरा यह संदेश सभी तक जरूर पहुंचा देना | मैं अपने विचारों को निम्नलिखित चार पंक्तियों के साथ खत्म करना चाहूँ गी :

'जिंदगी में मुश्किलें तमाम है, फिर भी लबों पर एक मुस्कान है
जब जीना हर हाल में ही है, जो मुस्कुराकर जीने में क्या नुकसान है'

मनीषा

बी. ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

प्रकृति

प्रकृति का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है | प्रकृति से हम हर तरह से जुड़े हैं | प्रकृति हमारे साथ पूरी तरह से वफादार है | पेड़-पौधे, फूल-पत्तियां, चारों ओर हरियाली का माहौल छाया रहता है | यही कारण है कि प्रकृति हमें बहुत सुंदर और एक अद्भुत खजाना लगती है| प्रकृति हमें खाने से लेकर सोने तक के संसाधन उपलब्ध कराती है,इसलिए हमें इसका हनन नहीं करना चाहिए क्योंकि प्रकृति का साथी बनने में जो मजा है ,वह उसके हनन में नहीं है | हमें हमेशा प्रकृति के अनुकूल कार्य करना चाहिए क्योंकि अगर हम प्रकृति के अनुसार ही रहेंगे तो हम उसका लाभ अच्छी तरह से उठा सकते हैं| प्रकृति शांत अवस्था में किसी सुंदर दुल्हन की भांति प्रतीत होती है और एक खिले हुए फूल सी लगती है|

अंशु तिवारी

हिंदी विशेष,द्वितीय वर्ष

मेरे आदर्श:मेरे पिता

आजकल के समय में हम अपने कार्यों में इतना व्यस्त हो गए हैं कि अपने जीवन के उद्देश्यों को भूलते जा रहे हैं | हम ना ही अपने परिवार के साथ समय बिताते हैं और ना ही अपने जीवन में घट रही घटनाओं को उनसे साझा करते हैं | मैं देहरादून से सम्बन्ध रखती हूँ इसलिए मुझे अपने परिवार से दूर दिल्ली शहर में आगे की शिक्षा ग्रहण करने के लिए रहना पड़ता है | मुझे अपने परिवार की बहुत याद आती है पर मैं कुछ नहीं कर सकती क्योंकि किसी ने सही ही कहा है कि कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है | मैं घर से दूर रहने का तनाव झेल रही हूँ |मेरी भावनाओं को वही लोग समझ सकते हैं जो मेरी ही तरह अपने घरों से दूर किसी नयी जगह पर रहकर पढ़ रहे हैं और अपने जीवन को एक नए मुकाम तक ले जाने की चाह रखते हैं | मेरे पिता बचपन से ही मेरे आदर्श रहे हैं क्योंकि जो भी हम आज हैं सब उन्हीं की बदौलत हैं |माँ तो दिनभर बच्चों के साथ रहती है इसलिए बच्चे उनसे ज्यादा जुड़े रहते हैं, पर पिता दिन भर काम करते हैं और यही कोशिश करते हैं कि परिवार को किसी भी प्रकार की कमी महसूस ना हो | कहा भी गया है:

खुद एक रोटी खाकर परिवार का पेट भरे वो होता है पिता,
धूप में खड़े रहकर जो परिवार को छाया दे वह होता है पिता,
जो खुद रो कर भी दूसरों को हंसाए वो होता है पिता,
खुद नंगे पैर चलकर दूसरे के पैरों को काँटों से बचाए वह होता है पिता|

इनकी जितनी सराहना की जाए वो कम है | मेरे लिए मेरे पिता सबसे ऊपर हैं क्योंकि वह बिना बोले ही मेरी हर इच्छा की पूर्ति कर देते हैं | वह अपने बचपन से ही परिश्रम करते आए हैं | उन्होंने अपने जीवन में हर कठिन पड़ाव को पार किया है चाहे वह गरीबी हो या बिना घर के रहना आदि | तभी मैं उन्हें अपना आदर्श मानती हूँ क्योंकि हमारे भीतर हर परिस्थिति से गुजरने की क्षमता होनी चाहिए | आज भी उनकी आवाज सुनते ही मेरे चेहरे पर एक अलग ही मुस्कान आ जाती है | मेरे लिए मेरे पिता ही भगवान हैं और आज हम जो कुछ भी हैं उन्हीं की वजह से हैं | अगर हम अपने माता-पिता की इज्ज़त करते हैं और उनका सम्मान करते हैं तो हम तीर्थ घूम लेते हैं |

लक्षिता
बी. ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

योग के लाभ

क) योग करने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है|
ख) योग करने से हमारा शरीर लचीला बनता है जिसके फलस्वरूप हमारे शरीर को एक सही आकृति प्राप्त होती है|
ग) योग करने से हमारा शरीर फुर्तीला होता है एवं कार्य क्षमता बढ़ती है|
घ) योग से हमारे विचारों में भी बदलाव आता है तथा सोचने- समझने की क्षमता में भी वृद्धि होती है|
च) योग से कई सारी बीमारियों को भी खत्म किया जा सकता है|
ज) योग करने से शारीरिक समस्याओं पर नियंत्रण पाया जा सकता है|
झ) योग करने से हमें बहुत से लाभ मिलते हैं इसलिए हमें योग को प्रतिदिन करना चाहिए|

सपना
हिंदी विशेष , द्वितीय वर्ष

हमारे माता पिता

हमारे जीवन में माता-पिता का बहुत बड़ा योगदान होता है| हम अपने माता-पिता का कर्ज कभी नहीं चुका सकते| मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं इतने बड़े शहर में आकर पढ़ूँगी,अपने माता-पिता व परिवार के अन्य सदस्यों से दूर रहूँगी | पहले कभी भी मन में यह भाव नहीं आया कि माता-पिता हमारे लिए क्या है? परंतु अब कदम-कदम पर उनकी बातें, उनके संस्कार, उनका समर्पण याद आता है| एक पिता का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, वह रोज रात को ठंडी रोटी खाते हैं, परंतु हमारी गरम रोटी के लिए पूरा दिन मेहनत करते हैं| समाज में कुछ लोग जहाँ बेटियों को बोझ मानते हैं, वहाँ मेरे पापा ने मुझे पढ़ने के लिए दिल्ली भेजा| मेरे पापा मेरे बगैर नहीं रह पाते थे, परंतु मुझे काबिल बनाने के लिए उन्होंने हर स्थिति को स्वीकार कर लिया|

मेरी माँ ने अपनी जॉब छोड़ दी थी, ताकि हमें कभी किसी भी चीज की परेशानी ना हो| मेरी माँ मुझ पर इतना विश्वास करती है कि उन्होंने मुझे दिल्ली भेजने से मना नहीं किया| आज मुझे खुद उठना पड़ता है,खाना बनाना पड़ता है, तब लगता है कि उनका सहयोग कितना है, बिना हमसे कुछ उम्मीद किए वे हमारे लिए कितना कुछ करते हैं:

Their contribution is unconditional and priceless!

हमारे माता-पिता जो कुछ भी हमारे लिए करते हैं उसे हमें कभी नहीं भूलना चाहिए| आज की पीढ़ी अपने आप को शिक्षित कहती है लेकिन यह कैसी शिक्षा है जो दूसरों का आदर-सम्मान करना भुला देती है| वैसे सबको अपने किए हुए कार्य, अपनी कही हुई बातें अच्छी लगती हैं, परंतु कभी ध्यान दिया जाए तो पता चले कि आखिर माता-पिता की बात ही हमें सुख देती है| मैं लोगों से यह कहना चाहती हूँ कि शिक्षा सिर्फ पैसे कमाने के लिए नहीं लेनी चाहिए|बल्कि शिक्षा पाकर हमें माता-पिता और सभी बड़ों का सम्मान करना सीखना चाहिए|

महिमा

बी.ए. प्रोग्राम,प्रथम वर्ष

मेरे स्कूल के दिन

मुझे स्कूल के वो दिन याद आते हैं जब हम अपने दोस्तों के साथ मस्ती करते रहते थे| वह ऐसी यादें हैं जो पूरी जिंदगी हमारे मस्तिष्क में रहेंगी |उस समय हमें किसी भी तरह की टेंशन नहीं होती थी,तब हम केवल खुले आकाश में उड़ना ही पसंद किया करते थे| हम अपने दोस्तों के साथ खाना शेयर करते थे| उस समय को जितना भी याद करें या जब भी याद करें वह सभी यादें जीवित हो जाती हैं| स्कूल के दिनों में हम दोस्तों के साथ खूब मस्ती किया करते थे| उस समय हमें अपने कैरियर की भी कोई चिंता नहीं होती थी| हम अपने दोस्तों का लंच छीन-छीन कर छुप छुपा कर खाते थे | उन खास दिनों को ऐसे हम चाह कर भी वापस नहीं ला सकते | स्कूल में की गई दोस्ती अक्सर हमेशा निभाई जाती है और स्कूल में जिस तरह के दोस्त मिलते हैं उस तरह के दोस्त बाद में नहीं मिलते |अभी मैं कॉलेज में पढ़ रही हूँ और कॉलेज में हम पर काफी जिम्मेदारी आ जाती है, जिससे स्कूल के समय हमारे अंदर जो बचपना भरा होता था, वह कहीं लुप्त हो गया है | मुझे स्कूल के दिन याद आते हैं , जो खास दोस्तों के संग बिताए थे|

कहकशा

हिंदी विशेष,द्वितीय वर्ष

कला

चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के तत्व और सौंदर्य का रंग भरता है।

-रामकुमार वर्मा

मन-मयूर

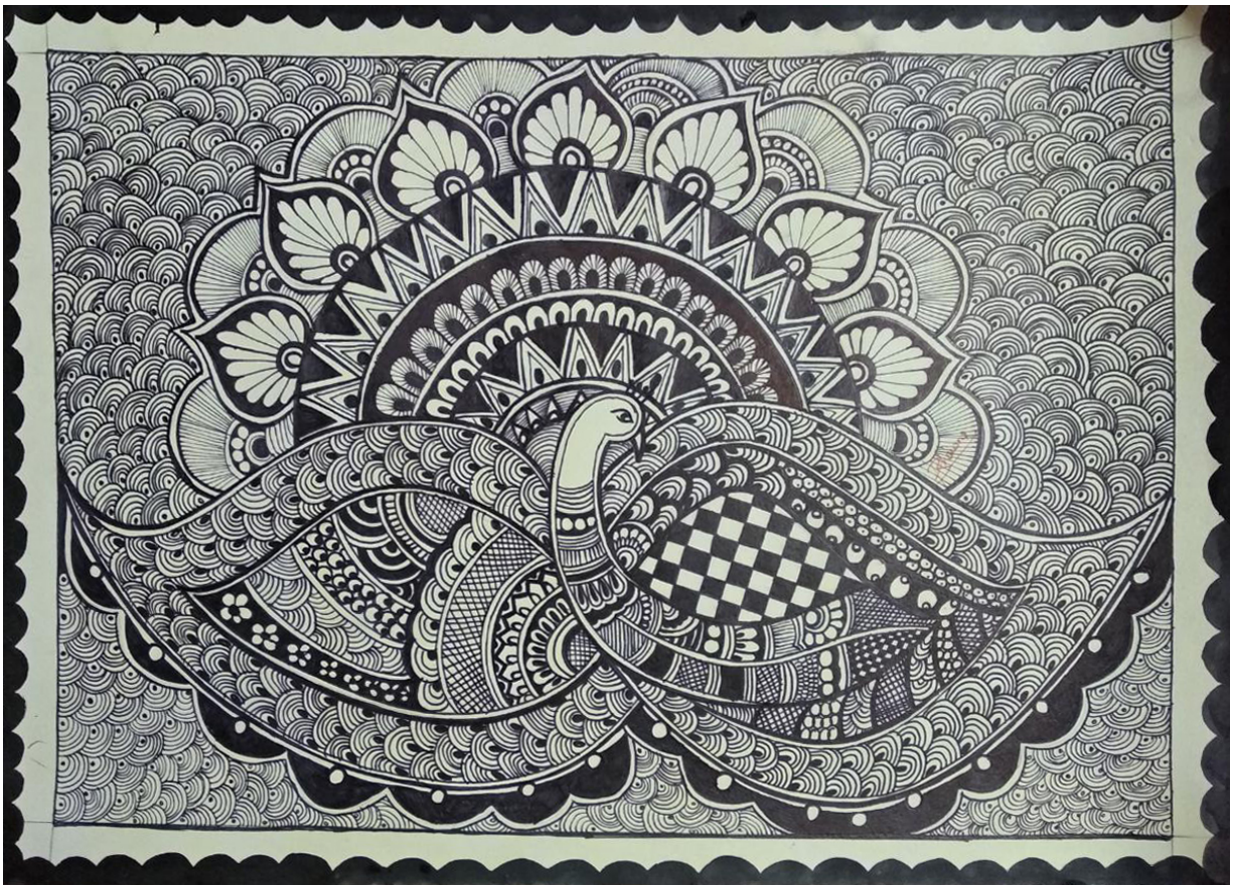

भावना शर्मा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

अस्ताचलगामी सूर्य

भावना शर्मा

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

आसमाँ छू लूँ

अनीता कुमारी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

प्रतिच्छाया

अनीता कुमारी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

मैत्रेयी कॉलेज

प्रतिबद्धता

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कॉलेज को ज्ञान केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित करना